शील के बरवै छंद

शेषनाथ शर्मा 'शील'

FH3XPN

जीवन परिचय

छत्तीसगढ़ी के क्लासिक कवि शेषनाथ शर्मा जी का जन्म पौष शुक्ल द्वादसी संवत 1968 (14 जनवरी 1914) जांजगीर में हुआ। आप संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, उर्दू, मराठी और हिन्दी साहित्य के अधिकारी विद्वान थे। आपकी रचनाएँ कानपुर के सुकवि, काव्य कलाधर, राष्ट्र धर्म, अग्रदूत, संगीत सुधा, विशाल भारत जैसे उच्च कोटि की पत्रिकाओं में छपती थी। **कविता लता, और रवीन्द्र दर्शन** आपका प्रकाशित काव्य ग्रंथ है। आपने हिन्दी के अतिरिक्त, छत्तीसगढ़ी में भी लेखन कार्य किया। रस सिद्ध कवि शील जी ने छत्तीसगढ़ी में बरवै छंद को प्रतिष्ठित किया। डॉ. पालेस्वर शर्मा जी के शब्दों मे शील जी की प्रारंभिक कविताएं छायावादी है। आपकी मृत्यु 7 अक्टूबर,1997 में हो गई।

खण्ड–अ

बिदा के बेरा

सुसकत आवत होही, भइया मोर,
छइहा मा डोलहा, लेहु अगोर।

बहुत पिरोहिल ननकी, बहिनी मोर,
रो–रो खोजत होही, खोरन–खोर।

तुलसी चौंरा म देव, सालिग राम,
मइके ससुर पूरन, करिहौ काम।

अँगना कुरिया खोजत, होही गाय,
बछरू मोर बिन काँदी, नइच्च खाय।

मोर सुरता म भइया, दुख झन पाय,
सुरर–सुरर झन दाई, रोवै हाय।

तिया जनम के पोथी, म दुई पान,
मइके ससुर बीच म, पातर प्रान।

खण्ड–ब

ससुरार म मइके के सुरता

इहाँ परे हे आज, राउत हाट,
अरे कउवाँ बइठके, कौंरा बाँट।

दूनों गाँव के देव, करव सहाय,
मोर लेवाल जुच्छा, कभु झन जाय।

इहाँ हावय कबरी, दोहिन गाय,
ननकी ऊहाँ गोरस, बिन नइ खाय।

मइया आइस कुलकत, राँधे खीर,
हाय विधाता कइसन, धरिहौं धीर।

पानी छुइस न झोंकिस, चोंगी पान,
हाय रे पोथी धन रे, कन्या दान।

मोर संग म नहावै, सूतै खाय,
ते भाई अब लकठा, म नई आय।

भाई आधा परगट, आधा लुकाय,
ठाढ़े मुरमुर देखत, रहिथे हाथ।

खण्ड–स

मइके म ससुराल के सुरता

तन एती मन ओंती, अड़बड़ दूर,
रहि–रहि नैना नदिया, बाढ़े पूर।

मन–मछरी ला कइसे, परिगे बान,
सब दिन मोर रहिस अब होगे आन।

मन–मछरी ह धार के, उल्टा जाय,
हरके ला मन बैरी, नइच्च भाय।

मुँह के कौंरा काबर, उगला जाय,
रहि–रहि गोड़ फड़कथे, काबर हाय।

मोर नगरिहा पावत, होही घाम,
बैरी बादर तैं कस, होगे बाम।

थकहा आहीं पाहीं, घर ल उदास,
कइसे तोरा करहीं, बूढ़ी सास।

कइसे डहर निहारौं, लगथे लाज,
फुँदरा वाला बजनी, पनहीं बाज।

शब्दार्थ

सुसकत – सुबकना, सिसकना; **डोलहा** – डोली उठाने वाला; **आवत होही** – आते होंगे; **छइँहा** – छाया; **लेहु** – लेना; **अगोर** – प्रतीक्षा करना; **पिरोहिल** – प्यारी, प्यारा; **ननकी** – छोटी, छोटा; **खोरन–खोर** – गली–गली; **कुरिया** – कमरा (कक्ष); **कांदी** – हरी घास; **सुरता** – याद; **सुरुर–सुरुर** – याद करके रोने की क्रिया; **तिया** – स्त्री; **पातर** – पतला; **हाट** – बाजार; **कउवां** – कौआ, काग; **कौंरा** – ग्रास, निवाला; **लेवाल** – बहन या पत्नी को विदा करा कर साथ ले जाने वाला; **जुच्छा** – खाली; **कबरी** – चितकबरी; **गोरस** – गाय का दूध; **कुलकत** – प्रसन्न चित्त; **राँधे** – भोजन बनाए; **झोंकन** – पकड़ना; **हरके** – मोड़ना; **घाम** – धूप; **डहर** – रास्ता; **बजनी पनही** – चमड़े का वह जूता जिसे पहन कर चलने पर आवाज करता हो; **बाज** – बजना; **तोरा** – प्रबंध, व्यवस्था; **बाम** – विपरित।

अभ्यास

पाठ से

1. ''सुसकत आवत होही भइया मोर'' पंक्ति के अनुसार दुल्हन की मनोदशा का उल्लेख कीजिए।
2. मायका एवं ससुराल के बीच की स्थिति को कवि ने 'पातर प्रान' क्यों कहा है?
3. बहन को लिवाने पहुँचा भाई अनमना सा क्यों है?
4. नायिका के मन का, धारा के विपरीत जाने का संदर्भ दीजिए।
5. नायिका अपने पति के कष्ट की कल्पना करके दुःखी हो जाती है। पाठ में आए हुए उदाहरणों का उल्लेख करते हुए समझाइए।

पाठ से आगे

1. विवाह पश्चात् लड़कियों का ससुराल जाना वैवाहिक रीति का एक अंग है। इस रीति पर अपने विचार लिखिए।
2. आपकी शाला में विदाई कार्यक्रम आयोजित किए जाते होंगे। शाला के विदाई कार्यक्रम एवं घर या पड़ोस में बेटी की विदाई का तुलनात्मक वर्णन कर लिखिए।
3. ''राउत, हाट, बाजार, मेले गाँव से गहरे जुड़े होते हैं'' इस कथन पर अभिमत दीजिए।
4. विवाह पूर्व लड़की की मायके के प्रति कैसी जिम्मेदारी होती है और विवाह पश्चात् ससुराल में उसके क्या–क्या दायित्व होते हैं? अपनी माँ, भाभी अथवा विवाहित बहनों से उनके अनुभव सुनिए एवं उनका लेखन कीजिए।
5. कविता में कई स्थलों पर सामाजिक मान्यताओं का उल्लेख किया गया है जैसे–गोड़ फड़कना,

FHCTRB

बहन/बेटी के घर का अन्न–जल ग्रहण न करना, कौआ का कौंरा बाँटना आदि अपने साथियों के साथ चर्चा कर इनके विषय में अपने विचार लिखिए।

6. हम सभी के पास किसी न किसी प्रकार की जिम्मेदारियाँ होती हैं। जब हम अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन अच्छे से करते हैं तो हमें आत्मसंतोष का अनुभव होता है। आपकी व आपके परिजनों की क्या–क्या जिम्मेदारियाँ हैं? इसे ध्यान में रखते हुए निम्न तालिकाओं को पूरा कीजिए। आप इस संदर्भ में साथियों से चर्चा कर सकते हैं।

अभिभावकों की		
पारिवारिक	**सामाजिक**	**वैयक्तिक**

अपनी		
पारिवारिक	**सामाजिक**	**वैयक्तिक**

भाषा के बारे में

FHLPSY

1 निम्नलिखित शब्द समूह के स्थान पर छत्तीसगढ़ी का एक शब्द लिखिए–

शब्द समूह		**एक शब्द**
(क) जो नाँगर (हल) चलाता है	–	नँगरिहा
(ख) कुएँ या तालाब से घड़े में पानी भरकर लाने वाली स्त्री	–	----------
(ग) काम करने वाला	–	----------
(घ) आम का बगीचा	–	----------

2. काव्य में जहाँ वर्णों की आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण– ''तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।''

यहाँ 'त' वर्ण की आवृत्ति हुई है, इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार हैं।

इसी प्रकार पाठ में आए हुए अनुप्रास अलंकार के अन्य उदाहरणों को पहचान कर लिखिए।

3. जहाँ उपमेय (जिसकी तुलना करते हैं।) में उपमान (जिससे तुलना की जाती है) का आरोप किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण– मैया मैं तो चंद्र–खिलौना लैहौं।

यहाँ खिलौने (उपमेय) को चाँद (उपमान) ही मान लिया गया है।

पाठ में आए हुए रूपक अलंकार के अन्य उदाहरणों को पहचान कर लिखिए।

4. **बरवै छंद–** यह अर्ध सम मात्रिक छंद है, जिसके विषम चरणों (पहले व तीसरे चरण) में 12–12 एवं सम चरणों (दूसरा व चौथा चरण) में 7–7 मात्राओं की यति से 19 मात्राएँ होती हैं। अंतिम में गुरु–लघु मात्राएँ होती है।

उदाहरण– भाषा सहज सरस पद, नाजुक छंद, (12, 07 = 19)

जइसे गुर के पागे, सक्कर कंद। (12, 07 = 19)

इस प्रकार पाठ से अन्य पदों की मात्राओं की गणना कीजिए।

5. इसके बारे में भी जानिए–

शब्द गुण– ''गुण साहित्य शास्त्र में काव्य शोभा के जनक हैं।''

इसके तीन प्रकार हैं–

(क) माधुर्य गुण– चित्त को प्रसन्न करने वाला गुण माधुर्य होता है। श्रृंगार रस का वर्णन इससे भावपूर्ण होता है।

(ख) प्रसाद गुण– चित्त को प्रभावित करने वाला गुण प्रसाद होता है। शांत रस एवं करुण रस का वर्णन इससे भावपूर्ण होता है।

(ग) ओज गुण– चित्त को उत्तेजित करने वाला गुण ओज गुण होता है। वीर रस का वर्णन इससे भावपूर्ण होता है।

प्रस्तुत पाठ में किस शब्द गुण की बहुलता है? नाम लिखकर उदाहरण दीजिए।

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ी के विवाह–गीतों का संकलन कीजिए एवं कक्षा में उसका सस्वर गायन कीजिए।
2. अपने क्षेत्र में प्रचलित विवाह की रस्म पर एक छोटा लेख लिखिए।

FYZY9I